आचार्य श्री विराग सागर विधान

रचियता : श्री विशद सागर जी महाराज

मंगलाष्टक

अर्हन्तों भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः।
आचार्याः जिन शासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः॥
श्रीसिद्धांत-सुपाठकाः, मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः।
पंञ्चेते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु नः मंगलम्॥

हस्त प्रक्षालन मंत्र : ॐ ह्रीं असुजर-सुजर हस्त प्रच्छालनं करोमि।
अमृत स्नान मंत्र- ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतं वर्षणे,
अमृतं श्रावय श्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां
द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः स्वाहा।

1 पाद प्रक्षालन

विराग सिन्धु गुरुवर के पद में वन्दन हैं-2
विशद भाव से हे गुरुवर! अभिनन्दन हैं॥
निर्मल जल से, गुरु के चरण धुलाते हैं।
तव चरणों में हे गुरु! शीश झुकाते हैं॥

तर्ज- दुनियाँ में संत हजारों हैं-

प्रासुक यह नीर भराया है, गुरुवर के चरण धुलाते हैं।
महिमा गुरुवर की है अनुपम, हम हर्ष हर्ष गुण गाते हैं॥
गुरुवर का दर्शन आज मिला, मेरे अतिशय सौभाग्य जगे॥

आचार्य श्री विराग सागर पूजन

स्थापना

हे विराग सिन्धु! हे विराग सिन्धु!, तव चरणों में करते अर्चन।
हे मोक्ष मार्ग के अभिनेता!, हम करते हैं शत् शत् वन्दन॥
ना भरता है मन दर्शन से, अतएव रचाते हैं पूजन।
मम हदय कमल में आ तिष्ठो, हे तीर्थंकर के लघुनन्दन!।

ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन्! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्

॥विरागोदय छन्द॥

नील गगन से उठी तरंगों, सी लेकर के जल धारा।
अर्पित करते गुरु चरण में, करो सफल जीवन सारा॥
विशद अर्चना को गुरु मेरी, यदि आपने स्वीकारा।
मुझको भी मिल जाएगा गुरु, जन्म जरा से छुटकारा॥1॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन फैलाता घिसने पर, चारों दिश में श्रेष्ठ सुगन्ध।
भव संताप नाश कर हे प्रभु!, हो जाऊँगा मैं निर्द्वन्द॥

विशद अर्चना को गुरु मेरी, यदि आपने स्वीकारा।
मुझको भी मिल जाएगा गुरु, भवाताप से छुटकारा॥2॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत धवल स्वच्छ ले निर्मल, गुरू आपके आया द्वार।
चरण शरण में आया हे गुरु!, करो शीघ्र मेरा उद्धार॥
विशद अर्चना को गुरु मेरी, यदि आपने स्वीकारा।
मुझको भी मिल जाएगा गुरु, क्षय जीवन से छुटकारा॥3॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर सिन्धु गुरुवे नमः अक्षतं निर्व. स्वाहा।

सुरभित श्रेष्ठ सुगन्धित लाया, पुष्प मनोहर भरे सुवास।
हे गुरु!सम्यक् चारित्र पा के, महक उठे मानव इतिहास॥
विशद अर्चना को गुरु मेरी, यदि आपने स्वीकारा।
मुझको भी मिल जाएगा गुरु, काम रोग से छुटकारा॥4॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर सिन्धु गुरुवे नमः पुष्पं निव. स्वाहा।

सरस मनोहर सुरभित चरु मैं, सदियों से खाता आया।
रसना इन्द्रिय वश करने अब, नैवेद्य चढ़ाने यह लाया॥

विशद अर्चना को गुरु मेरी, यदि आपने स्वीकारा।
मुझको भी मिल जाएगा गुरु, क्षुधा रोग से छुटकारा।।5।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर सिन्धु गुरुवे नमःनैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मिथ्या मोह हृदय में छाया, भटक रहा सारा संसार।
दीपक ले पूजूँ हे गुरुवर!, दूर करो भ्रम तम इस बार।।
विशद अर्चना को गुरु मेरी, यदि आपने स्वीकारा।
मुझको भी मिल जाएगा गुरु, मोह तिमिर से छुटकारा।।6।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर सिन्धु गुरुवे नमः दीपं निर्व. स्वाहा।

प्रयत्न किया है भव- भव में पर, कर्म नहीं कर सके शमन।
अतः सुगन्धित धूप जलाते, अष्ट कर्म का होय दमन।।
विशद अर्चना को गुरु मेरी, यदि आपने स्वीकारा।
मुझको भी मिल जाएगा गुरु, अष्ट कर्म से छुटकारा।।7।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर सिन्धु गुरुवे नमः धूपं निर्व. स्वाहा।

कैसे पाएँ मोक्ष मार्ग का, सिर पर चढ़ा पाप का भार।
फल से पूज रहे हे स्वामी!, पाने को अब शिव का द्वार।।
विशद अर्चना को गुरु मेरी, यदि आपने स्वीकारा।
मुझको भी मिल जाएगा गुरु, नश्वर जग से छुटकारा।।8।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः फलं निर्व. स्वाहा।

पाए गुरु आचार्य सुपद शुभ, मोक्ष मार्ग को अपनाया ।
मैरे पास नहीं है कुछ मैं, फिर भी अर्घ्य बना लाया॥
विशद अर्चना को गुरु मेरी, यदि आपने स्वीकारा।
मुझको भी मिल जाएगा गुरु, पुण्य पाप से छु टकारा॥9॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांती धारा के लिए, भर कर लाए नीर।
इस भव से मुक्ती मिले, मिल जाए भव तीर॥

शान्तये शांतिधारा

दोहा- पुष्प मँगाए बाग से, पुष्पांजलि के हेतू।
अर्चा करते भाव से, पाने शिव का सेतू॥

पुष्पांजलि क्षिपेत्

जयमाला

दोहा- तुमको पाकर के गुरो! जगती हुई निहाल।
चिंतामणि रत्नत्रयी, गाते तव जयमाल॥

।।ज्ञानोदय छन्द।।

रहते निमग्न तुम चेतन में, चिन्तन में सदा विचरते हो।
चिन्मय शुद्धात्म स्वरूपी निज, आध्यात्म ध्यान रत रहते हो॥

अविकारी मदन जयी निर्मल, तुम संग रहित संयम धारी।
है चित्त संयमासक्त विशद, आचार्य गुरु जग उपकारी।।1।।
हे चिन्तामणि! हे कल्पतरु!, जग में ना कोई उपमाएँ।
हम भक्तआपके शुभकारी, प्रमुदित होकर के गुण गाएँ।।
दुनियाँ यह सारी की सारी, जब अटक रही हैं भोगों में।
इस विषम काल में भी गुरुवर, तुम मगन रहो निज योगों में।।2।।
गुरुदेव रहे इस जगती पर, ज्यों कीच बीच में कमल रहे।
लोहे में जंग लगे हम हैं, तुम स्वर्ण के जैसे अमल रहे।।
गुरुवर विराग के बाग विशद, गुण का सौरभ बिखराते हैं।
मधुकर हम भक्तों को संयम, की सौरभ से महकाते हैं।।3।।
दिन में सारे संसारी जन, दुख वधक ही सब काम करें।
थककर के वे सब रात्री में, होके अचेत विश्राम करें।।
किन्तु गुरुवर तुम तत्वों का, जग जन को ज्ञान कराते हों।
हो सावधान तुम रात्री में, निज आतम ध्यान लगाते हो।।4।।
दोहा- जगत हितैषी आप हो, करते जग कल्याण।
रत्नत्रय देकर गुरो!, दो शिव का सोपान।।

ॐ हूँ श्री परम पूज्य आचार्य गुरुदेव विराग सिन्धु गुरुवे नम:अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वं. स्वाहा।

दोहा- लघु नन्दन तीर्थेश के, विराग सिन्धु है नाम।
चरणों में करते 'विशद', बारम्बार प्रणाम।।

इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्

छत्तिस मूलगुण

पंचाचारी आप हो, पंचम युग के संत।
छत्तिस गुण धारी गुरू, तव पद नमन अनन्त॥
पुष्पांजलिंक्षिपेत्।।

पंचाचार के अर्घ्य

।।मोतियादाम छन्द।।

पालते गुरुवर सम्यक् दर्श, चरण रज पा हो मन में हर्ष।
करें हे गुरू! आपका ध्यान, शीघ्र हो अब मेरा कल्याण॥1॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे: दर्शनाचार्य धारकाय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।
जगाया गुरु ने सम्यक्ज्ञान! अतः करते हम गुरु गुणगान।
करें हे गुरू! आपका ध्यान, शीघ्र हो अब मेरा कल्याण॥2॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नम: ज्ञानाचार्य धारकाय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।
पालते गुरुवर सच्चारित्र, धर्म के धारी परम पवित्र।
करें हे गुरू! आपका ध्यान, शीघ्र हो अब मेरा कल्याण॥3॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नम: चारित्रचार्य धारकाय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

बाह्य अभ्यन्तर तप को धार, पालते हैं गुरु तप आचार।
करें हे गुरू ! आपका ध्यान, शीघ्र हो अब मेरा क्ल्याण।।4।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः तपाचार्य धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गुरु जी पालें वीर्याचार, नमन जिन पद में बारम्बार।
करें हे गुरू! आपका ध्यान, शीघ्र हो अब मेरा क्ल्याण।।5।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः वीर्याचार्य धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूज्य हे गुरुवर! जैनाचार्य, पालने वाले पंचाचार।
करें हे गुरू! आपका ध्यान, शीघ्र हो अब मेरा क्ल्याण।।6।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमःअर्घ्यं निर्व स्वाहा।

द्वादश तप के अर्घ्यं

।।छन्द-सखी।।

तर्ज-सुनिये जिन अरज हमारी...

जो 'अनशन' तप के धारी, हैं आतम ब्रह्म विहारी।
गुरु विराग सिन्धु को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।7।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः अनशन सुतप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो भूख से कुछ कम खावें, तप 'उनोदर' अपनावें।
गुरु विराग सिन्धु को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥8॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः
उनोदर सुतप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
व्रत संख्या तप गुरु धारें, आहार को गुरू पधारें।
गुरु विराग सिन्धु को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥9॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः
व्रतसंख्यान सुतप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
जो गाए 'रस परित्यागी', शिवमग चारी बड़भागी।
गुरु विराग सिन्धु को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥10॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः
रसपरित्याग सुतप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
शैया 'विवक्त' अपनाएँ, निश्चल हो ध्यान लगाएँ।
गुरु विराग सिन्धु को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥11॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे विवक्त
शैयाशन सुतप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
हैं 'काय क्लेश' तप धारी, निर्ग्रन्थ आप अनगारी।
गुरु विराग सिन्धु को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥12॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः
कायक्लेश सुतप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं 'प्रायश्चित्त' तप धारी, कहलाए शिवमग चारी।
गुरु विराग सिन्धु को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।13।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः
प्रायश्चित सुतप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
जो 'विनय' सुतप को पावें, जग जन को विनय सिखावें।
गुरु विराग सिन्धु को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।14।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः
विनय सुतप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
तप 'वैयावृत्ती' कारी, हैं मोक्ष मार्ग के धारी।
गुरु विराग सिन्धु को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।15।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः
वैयावृत्ती सुतप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
करते 'स्वाध्याय' कराते, जग को सन्मार्ग दिखाते।
गुरु विराग सिन्धु को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।16।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः
स्वाध्याय सुतप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
तन के ममत्व परिहारी, 'व्युत्सर्ग' सुतप के धारी।
गुरु विराग सिन्धु को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।17।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः
व्युत्सर्ग सुतप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इस जग से राग हटाते, निश्चल हो 'ध्यान ' लगाते।
गुरु विराग सिन्धु को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥19॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः ध्यान सुतप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दश धर्म के अर्घ्य

॥ चौपाई॥

तर्ज- जे त्रिभुवन में जीव अनन्त

उत्तम 'क्षमा' के धारी संत, करने चले कर्म का अंत।
विराग सिन्धु हैं गुरू महान, जिनका हम करते गुणगान॥20॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः उत्तमक्षमाधर्मधारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उत्तम 'मार्दव' धर ऋषिराज, तव अर्चा करते हम आज।
विराग सिन्धु हैं गुरू महान, जिनका हम करते गुणगान॥20॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः उत्तममार्दवधर्मधारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तजने वाले मायाचार, उत्तम 'आर्जव' धर अनगार॥
विराग सिन्धु हैं गुरू महान, जिनका हम करते गुणगान॥21॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः उत्तमआर्जवधर्म धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तजी आपने लोभ कषाए, उत्तम 'शौच' धारे ऋषिराय।
विराग सिन्धु हैं गुरू महान, जिनका हम करते गुणगान॥22॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः उत्तमशौचधर्म धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
उत्तम 'सत्य' धर्म को धार, पालें आगम के अनुसार।
विराग सिन्धु हैं गुरू महान, जिनका हम करते गुणगान॥23॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः उत्तमसत्यधर्म धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
उत्तम 'संयम' पालें आप, जतने वाले सारे पाप।
विराग सिन्धु हैं गुरू महान, जिनका हम करते गुणगान॥24॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः उत्तमसंयम धर्मधारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
उत्तम 'तप' धारी ऋषिराज, तव गुण गाए सकल समाज।
विराग सिन्धु हैं गुरू महान, जिनका हम करते गुणगान॥25॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः उत्तमतपधर्म धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
पाने वाले अत्तम 'त्याग', तन से भी त्यागें अनुराग।
विराग सिन्धु हैं गुरुरूमहान, जिनका हम करते गुणगान॥26॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः उत्तमत्यागधर्मधारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उत्तम 'आकिन्चन' को धार, पालें विशद आप आचार।
विराग सिन्धु हैं गुरू महान, जिनका हम करते गुणगान॥27॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः उत्तमआकिन्चनध ारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
सब कुशील के त्यागें कर्म, धारें 'ब्रह्मचर्य' शुभ धर्म।
विराग सिन्धु हैं गुरू महान, जिनका हम करते गुणगान॥28॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः उत्तमब्रह्मचर्य धर्मधारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

त्रय गुप्ति के अर्घ्य

॥ पद्धड़ि छन्द॥

गुरु 'मन गुप्ति'पालें प्रधान, निज चेतन का नित करें ध्यान।
तव चरणों की अर्चा ऋशीष, हम करते हैं धर चरण शीश॥29॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः मनगुप्तिधारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
गुरु 'वचन गुप्ति' को आप धार, शुभ वचन पालते कर विचार।
तव चरणों की अर्चा ऋशीष, हम करते हैं धर चरण शीश॥30॥
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः वचनगुप्ति धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हे 'काय गुप्ति' धारी विशाल, इस तन को रखत हो सम्हाल।
तव चरणों की अर्चा ऋशीष, हम करते हैं धर चरण शीश।।31।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः कायगुप्तिधारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षट् आवश्यक के अर्घ्य

।।शम्भू छन्द।।

तर्ज- हे गुरुवर शाश्वत सुख दर्शक.....

'समता' रस को पीने वाले, करुणा रस बरसाते हैं।
विराग सिन्धु गुरु के चरणों हम, नत हो शीश झुकाते हैं।।32।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः समताआवश्यकधारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देव 'वन्दना' करने वाले, सबको आप कराते हैं।
विराग सिन्धु गुरु के चरणों, हम नत हो शीश झुकाते हैं।।33।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः वन्दनाआवश्यकधारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौबिस तीर्थंकर की 'स्तुति', विशद भाव से गाते हैं।
विराग सिन्धु गुरु के चरणों हम, नत हो शीश झुकाते हैं।।34।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः स्तुतिआवश्यकधारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'प्रतिकमण' करके दोषों को, गुरुवर आप नशाते हैं।
विराग सिन्धु गुरु के चरणों हम, नत हो शीश झुकाते हैं।।35।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः प्रतिक्रमणआवश्यकधारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
'प्रत्याख्यान' आप करते गुरु, त्याग भाव अपनाते हैं।
विराग सिन्धु गुरु के चरणों हम, नत हो शीश झुकाते हैं।।36।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः प्रत्याख्यानआवश्यकधारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
निज चेतन का 'ध्यान' लगाकर, ममता भाव हटाते हैं।
विराग सिन्धु गुरु के चरणों, हम नत हो शीश झुकाते हैं।।37।।
ॐ ह्रीं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सिन्धु गुरुवे नमः ध्यानआवश्यकधारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा- **बाल ब्रह्मचारी गुरू, शिष्य आपका बाल।**
भाव सहित गाये चरण, नत होके जयमाल।।

(चाल टप्पा)

जैन धर्म की अद्भुत महिमा, इस जग में गाई।
वीतरागता की महिमा शुभ, जग में फैलाई।।
गुरु पद पूजो हो भाई।

विराग सिन्धु गुरूवर की जग में, फैली प्रभुताई।
गुरु पद पूजो हो भाई।
दो मई उन्नीस सौ तिरेसठ को, जन्म लिए भाई।
कपूरचंद जी माँ श्यामा ने, शुभ लोरी गाई॥
गुरु पद पूजो हो भाई।
जिला दमोह की श्रेष्ठ पथरिया, शुभ नगरी गाई।
कटनी बोर्डिंग में गुरुवर ने, जो शिक्षा पाई॥
गुरु पद पूजो हो भाई।
कर कमलों से सन्मति गुरू के, अणु दीक्षा पाई।
क्षुल्लक पुण्यसागर बुढ़ार में, बने आप भाई॥
गुरु पद पूजो हो भाई।
नगर औरंगाबाद में गुरू ने, मुनि दीक्षा पाई।
विमल सिन्धु ने करुणा करके, दीक्षा दी भाई॥
गुरु पद पूजो हो भाई।
द्रोणागिरि जी सिद्ध क्षेत्र की, भूमि सुखदायी।
आठ नवम्बर सन् बानवे की, तिथि पावन गाई।
गुरु पद पूजो हो भाई।
ब्रह्मचर्य धारा लेखक ने, उसी समय भाई।
पद आचार्य प्रतिष्ठा गुरु की, जहाँ हुई भाई।
गुरु पद पूजो हो भाई।

संत शताधिक की इस जग में, फैली प्रभुताई।
बनादिए आचार्य गुरु कई, ज्ञान ध्यान दायी।।
गुरु पद पूजो हो भाई।

दोहा- **गुण गाऐं जो भाव से, पावें गुण भण्डार।**
निश्चय ही जग जीव वह, पावें भव से पार।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विराग सागर जी मुनीन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **गुरु गुण गाये भाव से, पाने गुरु आशीष।**
सुखशांती पाएँ विशद, झुका चरणों में शीशा।।

आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज की पूजा

स्थापना

हे ज्ञानमूर्ति! करुणा निधान, हे धर्म दिवाकर! करुणाकर
हे तपोमूर्ति! हे तेजपुंज!, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर
श्री विमल सिन्धु का विशद भाव से, करते हैं हम अभिनन्दन
तुम आन पधारो मेरे उर, गुरु करते हैं हम आह्वानन

ॐ ह्रूँ श्री आचार्य विमल सागर जी महाराज अत्र अवतर अवतरसंवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव वषट् सन्निधिकरणम्।

गुरु सम्यकज्ञान जलोदधि हैं, बरसाते अमृत नीर अहा।
मैं चातक बनकर चरणों में, अमृत पाने को खड़ा रहा।।

यह भरा कूप से जल पावन, अरु प्रासुक करके लाया हूँ।
गुरु भक्ती की शुभ गंगा में, अवगाहन करने आया हूँ॥
ॐ ह्रूँ श्री आचार्य विमल सागर जी मुनीन्द्राय मम् जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन सम चन्द्र वदन जिनका, जो चन्द्र किरण सम शीतल हैं।
चरणों की रज मलयागिरि है, जिनका आशीष सुमंगल है॥
मैं अन्तर्दाह मिटाने को, गुरु शीतल चन्दन लाया हूँ।
गुरु भक्ति की शुभ गंगा में, अवगाहन करने आया हूँ॥
ॐ ह्रूँ श्री आचार्य विमल सागर जी मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशय चन्दनं निर्व. स्वा.।

जिनने अक्षयपुर जाने को, अक्षय संयम को धारा है।
अक्षय विज्ञान जगे उर में, अक्षय संकल्प हमारा है॥
मैं अक्षय पद का अभिलाषी, शुभ अक्षय अक्षत लाया हूँ।
गुरु भक्ती की शुभ गंगा में, अवगाहन करने आया हूँ॥
ॐ ह्रूँ श्री आचार्य विमल सागर जी मुनीन्द्राय मम् अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वा.।

चैतन्य विपिन के चितरंजक, चेतन के सुमन खिलाते हैं।
निज अन्तर्वास सुवासित कर, गुरु सारा जग महकाते हैं। ।
मैं पुष्प पाखुड़ी हाथ लिए, गुरुदेव चरण में आया हूँ।
गुरु भक्ती की शुभ गंगा में, अवगाहन करने आया हूँ॥
ॐ ह्रूँ श्री विमल सागर जी मुनीन्द्राय मम् कामबाण विध्वंशनाय पुष्प निर्व. स्वा.।

आनन्द सुधामृत के निर्झर, आनन्द सतत् बरसाते हैं।
जो चेतन के रस कन्द विशद, चेतन की क्षुधा मिटाते हैं॥
चेतन की क्षुधा मिटाने को, यह व्यञ्जन सरस ले आया हूँ।
गुरु भक्ती की शुभ गंगा में, अवगाहन करने आया हूँ॥
ॐ ह्रूँ श्री आचार्य विमल सागर जी मुनीन्द्राय मम् क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वा.।

सद् ज्ञान किरण से आलोकित, ज्योतिर्मय सारा जग करते
जो हैं प्रकाश के पुंज विशद!, जीवों का मोह तिमिर हरते ॥
मैं मोह तिमिर का नाश करूँ, यह मणिमय दीप जलाया हूँ।
गुरु भक्ती की शुभ गंगा में, अवगाहन करने आया हूँ॥
ॐ ह्रूँ श्री आचार्य विमल सागर जी मुनीन्द्राय मम् मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वा.।

कर्मों की ज्वाला धूँ धूँ जलती, है अखिल विश्व दुख से व्याकुल।
कब धन्य सुअवसर मुझे मिले, नश जाये आतम का कल-मल॥
वसु कर्म नसाने को गुरुवर, यह धूप दशांगी लाया हूँ।
गुरु भक्ती की शुभ गंगा में, अवगाहन करने आया हूँ॥
ॐ ह्रूँ श्री आचार्य विमल सागर जी मुनीन्द्राय मम् अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वा.।

यह अखिल विश्व के फल खाए, पर तृप्त नहीं हो पाया हूँ।
मैं शिव मन्दिर में वास करूँ, ये भाव बनाकर आया हूँ॥

मैं अभय मोक्षफल पाने को, चरणों में श्रीफल लाया हूँ।
गुरु भक्ती की शुभ गंगा में, अवगाहन करने आया हूँ॥
ॐ ह्रूँ श्री विमल सागर जी मुनीन्द्राय मम् मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वा.।

शुभ क्षीर नीर सा जल लाया, चंदन में लाया मलयागिर।
अक्षय अक्षत हैं बासमती, मैं कमल पुष्प लाया मनहर॥
नैवेद्य लिए घृत रस पूरित, शुभ मणिमय दीप जलाये हैं।
हम धूप दशांगी सुरभित यह, बादाम श्री फल लाये हैं॥
आठों द्रव्यों को एक मिला, यह अर्घ्य बनाकर लाया हूँ।
गुरु भक्ती की शुभ गंगा में, अवगाहन करने आया हूँ॥
ॐ ह्रूँ श्री आचार्य विमल सागर जी मुनीन्द्राय मम् अनर्घ्य-पद प्राप्तय अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

जयमाला

दोहा- दुखियों के दुख मैंटकर, करते शांति अपार।
विमल सिंधु की हम सभी, करते जय-जयकार॥

(चौबोला छन्द)

हे गुरू आपके गुरु गुण की, शुभ जयमाला हम गाते हैं।
हम भाव सुमन लेकर आये, सुस्वर संगीत बजाते हैं॥
गुरुदेव आपके चरणों में, हम अर्चा करने आये हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं॥

ग्राम कोसमा उत्तर प्रदेश में, श्री गुरुवर ने जन्म लिया।
पिता बिहारी मात कटोरी, की कुक्षि को धन्य किया॥
अश्विन कृष्ण सप्तमी सम्वत्, उन्नीस सौ तिहत्तर पाए हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं॥
माता पिता ने सोच समझकर, नेमिचन्द्र शुभ नाम दिया।
नेमिचन्द्र ने विद्यालय में, जाकर के कुछ ज्ञान लिया॥
जैनधर्म की शिक्षा हेतू, नगर मोरेना आये हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं॥
शांतिसागर जी गुरुवर ने, यज्ञोपवीत संस्कार किया॥
शूद्र के हाथों का जल भोजन, चन्द्र सागर से त्याग किया।
बारह व्रत श्री वीर सागर जी, से जाकर गुरू पाए हैं॥
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं॥
महावीरकीर्ति से क्षुल्लक दीक्षा, बड़वानी में पायी थी।
आषाण शुक्ला पंचमी सम्वत्, बीस सौ सात सुहाई थी॥
नेमिचंद जी क्षुल्लक बनकर, वृषभ सागर कहलाए हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं॥
माघ सुदी द्वादशी को संवत्, दो हजार अरू सात महान्॥
धर्मपुरी में ऐलक दीक्षा, पाए गुरु चरणों में आन।

ऐलक बन करके गुरुवर जी, सुधर्म सागर कहलाए हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं॥
फाल्गुन शुक्ला त्रयोदशी शुभ, दो हजार नौ सम्वत् जान॥
सिद्ध क्षेत्र सोनागिरि जाकर, मुनिव्रत धारण किए महान्।
परम दिगम्बर मुनिवर बनकर, विमल सागर कहलाए हैं॥
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं॥
विक्रम सम्वत् दो हजार और, सत्रह का शुभ दिन आया।
नगर टूण्डला में गुरुवर ने, पद आचार्य शुमभ् पाया॥
शिक्षा दीक्षा देने वाले, दुखहर्त्ता कहलाए हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं॥
तीर्थ वन्दना करके गुरु ने, आतम का उद्धार किया॥
भूले भटके भव्य जनों का, गुरुवर ने उपकार किया।
तीर्थराज सम्मेद शिखर पर, गुरु अधिकार दिलाए हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं॥
पौष कृष्ण द्वादशी सु सम्वत, बीस सौ इक्यावन दिन आया।
तीर्थराज सम्मेद शिखर पर, मरण समाधि को पाया॥
पट्टाचार्य श्री गुरुवर का, भरत सिन्धु गुरू पाए हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं॥

दोहा- **जैनधर्म जिनतीर्थ का, किया 'विशद' उपकार।**
जैनधर्म को प्राप्त कर, हो आतम उद्धार॥

ॐ ह्रूँ श्री विमल सागर जी मुनीन्द्राय जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमल गुणों को प्राप्त कर, हुए विमल आचार्य
विमल धर्म को प्राप्त कर, विमल बनू अनगार

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्

आरती आचार्यश्री विमलसागर जी की

आज करें हम विमल सिंधु की, आरति मंगलकारी।
घृत के दीप जलाकर लाए, गुरुवर के दरबार॥
हो गुरुवर हम सब उतारें.....

1. **पिता बिहारी लाल आपके, मात कटोरी बाई।**
ग्राम कोसमा जन्म लिया है, जन-जन को सुखदायी॥
हो गुरुवर....
2. **पंच महाव्रत तुमने पाये, रत्नत्रय को पाया।**
पंच समीती गुप्ती पाकर, निज का ध्यान लगाया॥
हो गुरुवर...
3. **छह आवश्यक पाने वाले, धर्म ध्वजा के धारी।**
वीतराग निर्ग्रन्थ मुनीश्वर, जन-जन के उपकारी॥

हो गुरुवर...

4. सोनागिर पर दीक्षा पाकर, निज स्वरूप को पाया।
पद आचार्य टूण्डला पाकर, शुभ सन्मार्ग दिखाया॥
हो गुरुवर...

5. वीर निर्वाण पच्चिस सो इकतिस, तीर्थराज पर आये।
नश्वर देह छोड़कर स्वामी, 'विशद' समाधी पाए॥
हो गुरुवर...

6. मोक्षमार्ग पर बढ़कर हम भी, जीवन सफल बनाएँ।
कर्म नाशकर अपने सारे, मोक्ष महाफल पाएँ॥
हो गुरुवर...

आचार्य विराग सागर चालीसा

दोहा- विराग सिन्धु गुरु के चरण, वन्दन बारम्बार।
चालीसा गाते यहाँ, होय आत्म उद्धार॥

जय-जय विराग सिन्धु गुरुदेवा, भक्त करें तव पद की सेवा।
तुमने रत्नत्रय को पाया, जग को सच्चा मार्ग दिखाय॥1॥
कपूर चंद के राज दुलारे, श्यामा माँ के उर अवतारे जिला
दमोह श्रेष्ठ शुभ जानो, ग्राम पथरिया जिसमें मानो॥2॥
नौमी सुदि वैसाख बताई, जन्म लिया गुरुवर ने भाई।
गुरु अरविंद नाम शुभ कारी, यथा नाम गुण के गुरु धारी॥3॥

कटनी में गुरु शिक्षा पाए, सन्मति सिंधु वहाँ पर आए।
गुरु का आप विहार कराए, अन्तर में गुरु ज्ञान जगाए।।4।।
बीस फरवरी का दिन आया, सन् उन्नीस सौ अस्सी गाया।
गुरु बुढार में चलकर आए, क्षुल्लक दीक्षा गुरु से पाए।।5।।
किए साधना अतिशय कारी, फिर तन में पाए बिमारी।
नगर पांचवा गुरुवर आए, रहकर वहां इलाज कराए।।6।।
फिर समाधि की गुरु ने ठानी, हार कर्म ने आखिर मानी।
स्वास्थ्य लाभ गुरुवर ने पाया, फिर संयम का भाव जगाया।।7।।
गुरु औरंगावाद में आए, विमल सिन्धु के दर्शन पाए।
विमल सिन्धु गुरुवर से भाई, तुमने अपनी बात सुनाई।।8।।
गुरु अशीष आपने पाया, मुनि दीक्षा को फिर अपनाया।
मगसिर सुदि पंचमी जानो, मुनि दीक्षा पाए गुरु मानो।।9।।
भरत सिन्धु से शिक्षा पाए, उपाध्याय गुरु के जो गाए।
विमल सिन्धु उपसंघ बनाए, गुरु प्रभावना करने आए।।10।।
सद् उपदेश आपका पाए, भव्य जीव कई संघ में आए।
व्रती आपने कई बनाए, दीक्षा दे शिवराह दिखाए।।11।।
पुनः गुरू के दर्शन पाए, शिष्य देख गुरु हर्ष मनाए।
गुरुवर ने आशिष भिजवाया, पद आचार्य आपने पाया।।12।।
कार्तिक सुदि तेरस शुभ जानो, सिद्ध क्षेत्र द्रोढ़ागिर मानो।

वी.नि.25 सौ गाया, और अधिक उन्नीस बताया॥13॥
शिष्य आपने योग्य बनाए, ज्ञान ध्यान संयम अपनाए।
उनके भी उपसंघ बनाए, जैन धर्मकी धार बहाए॥14॥
शिष्यों को आचार्य बनाए, गणाचार्य अतएव कहाए।
शास्त्र लिखे कई मंगलकारी, पढ़ें सुनें जो कई नर नारी॥15॥
कुन्दकुन्द स्वामी के जानो, शास्त्र श्रेष्ठ उपकारी मानो।
रयणसार जानो शुभकारी, वारसाणुपेक्खा भी मनहारी॥16॥
संस्कृत टीका आप बनाए, शोध ग्रंथ के लेखक गाए।
प्रकृत भाषा में मनहारी, रचीं भक्तियाँ भी शुभकारी॥17॥
प्रज्ञा श्रमण आप कहलाए, ज्ञान दिवाकर पद वी पाए।
हे समाधि स्रमाटनिराले, श्रेष्ठ समाधि कराने आए॥18॥
श्रमण सूरि हो शिव पथगामी, संत निस्पृही हे जगनामी।
तीर्थोद्धारक आप कहाए, संत शिरोमणि पावन गाए॥19॥
पंचाशत पदवी के धारी, फिर भी आप रहे अविकारी॥
भक्त आपकी महिमा गाते, सुख शांति सौभाग्य जगाते॥20॥
दोहा- चलीसा चालीस दिन, श्री गुरुवर के अग्र।
विशद भाव से जो पढ़े, होवे पूर्ण समग्र॥

गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज की आरती

तर्ज–करहु आरती आज जिनेश्वर तुमरे द्वारे....

करहु आरती आज गुरु जी तुमरे द्वारे, तुमरे द्वारे....
विराग सिन्धु महाराज, गुरु जी तुमरे द्वारे...।टेक॥
कपूर चंद के राज दुलारे, माँ श्यामा की आँख के तारे।
जन्मे पथरिया गाँव–गुरु जी तुमरे द्वारे,
करहु आरती आज गुरु जी तुमरे द्वारे॥1॥
नाम अरविन्द आपने पाया, सार्थक तुमने जिसे बनाया।
पावन संयम धार–गुरु जी तुमरे द्वारे,
करहु आरती आज गुरु जी तुमरे द्वारे॥2॥
फाल्गुण शुक्ल पंचमी भाई, क्षुल्लक दीक्षा बुढ़ार में पाई।
पूर्ण सागर पाए नाम–गुरु जी तुमरे,
द्वारे करहु आरती आज गुरु जी तुमरे द्वारे॥3॥
ओरंगाबाद में दीक्षा पाए, विमल सागर जी गुरु कहाए।
विराग सागर जी पाए नाम–गुरु जी तुमरे द्वारे,
करहु आरती आज गुरु जी तुमरे द्वारे॥4॥
मंगसिर शुक्ल पंचमी जानो, बीस सौ चालिस सम्वत मानो
उन्निस सौ तिरासी साल–गुरु जी तुमरे द्वार,
करहु आरती आज गुरु जी तुमरे द्वारे॥5॥

सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरि गाया, पद आचार्य वहाँ पर पाया।
बने विशद आचार्य, गुरु जी तुमरे द्वारे,
करहु आरती आज गुरु जी तुमरे द्वारे॥6॥
कार्तिक शुक्ल त्रयोदशि जानो, बीस सौ उन्चास सम्वत मानो।
हो गई तिथि महान-गुरु जी तुमरे द्वारे,
करहु आरती आज गुरु जी तुमरे द्वारे॥7॥

izkfLr

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे दिल्ली प्रान्ते जनकपुरी नाम नगरे श्री महावीर जिनालय मध्ये रजत आचार्य वर्ष अवसरे निर्वाण सम्वत् 2544 वि.सं. 2074 कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे पंचमी गुरुवासरे श्री विरागसागर विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।